लिंगाष्टकं

लिंगाष्टकं

ब्रह्ममुरारिसुरार्चित लिंगं
निर्मलभासितशोभित लिंगं |
जन्मजदुःखविनाशक लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 1 ||

देवमुनिप्रवरार्चित लिंगं
कामदहं करुणाकर लिंगं |
रावणदर्पविनाशन लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 2 ||

सर्वसुगंधसुलेपित लिंगं
बुद्धिविवर्धनकारण लिंगं |
सिद्धसुरासुरवंदित लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 3 ||

कनकमहामणिभूषित लिंगं
फणिपतिवेष्टितशोभित लिंगं |
दक्षसुयज्ञविनाशन लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 4 ||

कुंकुमचंदनलेपित लिंगं
पंकजहारसुशोभित लिंगं |
संचितपापविनाशन लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 5 ||

देवगणार्चितसेवित लिंगं
भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगं |
दिनकरकोटिप्रभाकर लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 6 ||

अष्टदळोपरिवेष्टित लिंगं
सर्वसमुद्भवकारण लिंगं |
अष्टदरिद्रविनाशन लिंगं
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 7 ||

सुरगुरुसुरवरपूजित लिंगं
सुरवनपुष्पसदार्चित लिंगं |
परात्परं परमात्मक लिंगं [** परमपदं **]
तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगं || 8 ||

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ |
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ||